डिजिटल मासिक पत्रिका, अंकः 49वाँ, जुलाई–2025, विक्रम संवत् 2082

विद्या भारती विद्यालय

सनातन धर्म

सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कालेज

मिश्राना, लखीमपुर–खीरी ☎ 05872-796349 www.sdsvmbic.edu.in

सनातन स्वरा

हमारा आज, कल और हर दिन,
प्रकृति की ही देन है, इसकी रक्षा करें।

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

संरक्षक

श्रीमती रश्मि बाजपेई
अध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

डा. राकेश माथुर
उपाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

मार्गदर्शक

श्री चन्द्र भूषण साहनी
प्रबन्धक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री तुषार गर्ग
कोषाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

प्रधान सम्पादक

श्रीमती शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

सह–सम्पादक

श्री राजेश दीक्षित
समाजसेवी

डॉ. सीमा मिश्रा
उपप्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

डॉ. विजय कुमार शुक्ल
प्रवक्ता
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

तकनीकी मार्गदर्शक

श्री आशीष अवस्थी
सहा. आचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री अरविन्द कुमार अग्निहोत्री
कार्यालय सहायक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

GERMAN HOMEOPATHY RESEARCH
F O U N D A T I O N (I N D I A)

An ISO Certified 9001:2015

Homeopathy, Naturopathy, Ayurveda, Alternative Scientific Research

Under the National Institutions for Transforming India

Ministry of corporate affairs and Section-8 Licence No. 119552 Govt of India

Unique ID UP/2020/026227 (भारत सरकार)

Tax Act 1961Under Sec. (1) 12 A & Sec. (5) 80G govt. of India

8630376771
7052408004
9415210372
germanhrf@gmail.com

Ref : S-8-36/ghrf/2025 *Date*...18-06-2025.

सेवा में,

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदया

सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कालेज

लखीमपुर–खीरी।

महोदया,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आदरणीय प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी द्वारा ''सनातन स्वरा'' डिजिटल पत्रिका का 49वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। शिक्षा का प्रचार प्रसार एवं सनातन संस्कृति का संरक्षण एवं सनातन धर्म को बुनियादी ढाँचों से अवगत कराना है। राष्ट्र समाज लोक कल्याण के लिए छात्र–छात्राओं, अभिभावकों में आस्था विश्वास संस्कृति की रक्षा की परम्परा को बहुत आगे तक ले जाने का नाम ही सनातन स्वरा है, जो कि मानव समाज का मूल–मंत्र है। राष्ट्रहित में शिक्षा के क्षेत्र में सनातन स्वरा का प्रकाशन बहुत ही सराहनीय है।

मैं प्रकाशक, प्रकाशन समिति, विद्या मंदिर प्रबन्ध समिति एवं सहयोगी समाजसेवियों का आभार व्यक्त करता हूँ।

कुँवर डॉ0 बीर बहादुर धुरिया
भारतभूषण / चिकित्सा विभूषण
International Researcher & Philosopher

✆ 7985906793, 6394519190
HARSHIT PURWAR & CO.
Chartered Accountants

शुभकामना सन्देश

सेवा मे,
प्रधानाचार्य एवम् सम्पादकगण
सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इन्टर कालेज
मिश्राना, लखीमपुर-खीरी २६२७०१ (उत्तरप्रदेश)

सादर नमस्कार,

यह एक हर्ष का विषय हैं कि " सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इन्टर कालेज" मिश्राना लखीमपुर खीरी **मासिक डिजिटल पत्रिका "सनातन स्वरा'** का प्रकाशन **जुलाई 2021** से हो रहा है और कालेज ने 4 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किये| इसके लिए प्रधानाचार्य, सम्पादकगण और सभी सम्मानित स्रोतागढ़ एवम् अन्य को हार्दिक शुभकामनाये एवं आभार प्रकट करता हूँ |

मुझे अपना शुभकामना सन्देश लिखते हुए अत्यंत हर्ष कि अनुभूति हो रही है| आपका विद्यालय **"सनातन स्वरा"** का **उनचासवा अंक जुलाई 2025** में प्रकाशित करने जा रहा है |

डिजिटल पत्रिका पर्यावरण अनुकूल, किफायती और सभी के समक्ष आसानी से पहूँचाया जा सकता है| इस पत्रिका के माध्यम से कालेज अपनी सभी एवंम् विश्व में होने वाली अनेक गतिविधियों का विशलेषण कर छात्राओं के समक्ष संक्षेप में प्रस्तुत करता है जो उनके सर्वंगीण विकाश में सहायक सिद्ध होगी|

पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनायें |

भवदीय

Harshit Purwar

हर्षित पुरवार

चार्टर्ड एकाउंटेंट

Office : Hidayat Nagar Suagadha Road, Near Kumar Nagar Gate, Lakhimpur-Kheri 262701
caharshitoffice@gmail.com, harshitpurwar@gmail.com www.harshitpurwar.in

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,
सादर वंदन।

गर्मियों की तपिश से तपे मन को जब पहली वर्षा की बूँदें छूती हैं, तब केवल धरती ही नहीं, हृदय भी भीग उठता है– सावन की ओर बढ़ते इस जुलाई माह में हम उसी ताजगी, उसी ऊर्जा को लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत हैं सनातन स्वरा के 49वें अंक के साथ।

यह माह केवल ऋतु परिवर्तन का नहीं, चेतना और श्रद्धा के पुनर्जागरण का भी संदेश लेकर आता है। गुरु पूर्णिमा– भारतीय परंपरा का वह पवित्र दिवस जब हम अपने जीवन को आलोकित करने वाले गुरुओं को कृतज्ञता अर्पित करते हैं। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि ज्ञान केवल पुस्तकों में नहीं, बल्कि आचरण में है, और गुरु उसी ज्ञान के जीवन्त प्रतीक हैं।

इस पावन माह में हम स्मरण करते हैं भारत के उन रत्नों को, जिन्होंने अपने जीवन से हमें राष्ट्रप्रेम, विज्ञान, त्याग और विचारशीलता का पथ दिखाया।

27 जुलाई को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि है– एक वैज्ञानिक, एक राष्ट्रपति और उससे भी पहले एक शिक्षक, जिनकी सादगी और दृष्टिकोण आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा है। वहीं, 4 जुलाई को स्वामी विवेकानंद की पुण्यतिथि है जिन्होंने अपने तेजस्वी विचारों से न केवल भारत, बल्कि समूचे विश्व में भारतीय आध्यात्मिक चेतना की अलख जगाई।

23 जुलाई को हम दो अमर सेनानियों की जयंती मनाते हैं– बाल गंगाधर तिलक, जिन्होंने "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" का उद्‌घोष किया और चंद्र शेखर आज़ाद, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। ये दोनों विभूतियाँ हमें यह याद दिलाती हैं कि स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व भी है।

26 जुलाई को आता है कारगिल विजय दिवस– शौर्य, बलिदान और राष्ट्रभक्ति की वह अमर गाथा, जो हर भारतीय के हृदय में गर्व भर देती है। यह दिन केवल सैनिकों को श्रद्धांजलि देने का नहीं, अपितु यह प्रण लेने का भी है कि हम उनके त्याग को व्यर्थ न जाने दें।

जुलाई का एक और विशेष पक्ष है– ग्रीष्मावकाश के बाद विद्यालयों का पुनः आरंभ। उत्साह से भरे बच्चे, पुनः शिक्षालयों की ओर लौटते हैं। यह समय है फिर से सीखने, सृजन करने और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ने का।

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में आज हम एक संक्रमणकाल से गुजर रहे हैं, जहां परंपरा और तकनीक, दोनों साथ चल रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति हो या डिजिटल भारत की ओर बढ़ते कदम, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि आधुनिकता की दौड़ में हमारी सनातन जड़ें न छूट जाएँ।

अंत में, यही कामना कि यह माह हमें भीतर से समृद्ध करे। श्रद्धा, प्रेरणा, राष्ट्रप्रेम और ज्ञान के संगम से भरे इस जुलाई में हम सब मिलकर एक जागरूक, विचारशील और कर्मशील भारत के निर्माण में सहभागी बनें।

जून माह के इस अंक में *अतिथि लेखकों के रूप* में यशोधरा आर्य जी–प्रान्त कार्यवाहिका, लखनऊ द्वारा ''राष्ट्रसेविका समिति, आद्य प्रमुख संचालिका वन्दनीया लक्ष्मी बाई केलकर'', डॉ0 विशाल द्विवेदी जी– प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.एड. विभाग, वाई.डी.पी.जी. कॉलेज, लखीमपुर द्वारा ''गुरु पूर्णिमा का महत्व'', समीक्षा त्रिपाठी–जिला तरूणी प्रमुख (लखीमपुर), राष्ट्र सेविका समित द्वारा ''वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य मौसी जी : नारी को नारायणी बना राष्ट्र सेवा हेतु समर्पित करने वाली मातृशक्ति'' पर आलेख पठनीय हैं।

पत्रिका के संदर्भ में आपकी प्रतिक्रियाएँ ई–मेल आई.डी. sdbalika@rediffmail.com पर सदैव अपेक्षित है।

शुभकामनाओं सहित।

शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य

माह जुलाई – 2025 के महत्वपूर्ण दिवस

- 01 जुलाई– राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस
- 01 जुलाई– राष्ट्रीय चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स डे
- 03 जुलाई– अन्तर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस
- 04 जुलाई– स्वामी विवेकानन्द जी की पुण्यतिथि
- 06 जुलाई– लक्ष्मीबाई केलकर जयंती एवं डॉ0 श्यामा प्रसाद मुकर्जी जयंती
- 10 जुलाई– गुरु पूर्णिमा
- 11 जुलाई– विश्व जनसंख्या दिवस
- 14 जुलाई– श्रावण सोमवार व्रत शुरू
- 15 जुलाई– विश्व युवा कौशल दिवस
- 22 जुलाई– राष्ट्रीय झंडा अंगीकरण दिवस, विश्व मस्तिष्क दिवस
- 23 जुलाई– जन्मदिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक– स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक समाज सुधारक
- 26 जुलाई– कारगिल विजय दिवस
- 27 जुलाई– सीआरपीएफ स्थापना दिवस
- 28 जुलाई– विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस
- 29 जुलाई– विश्व बाघ दिवस
- 31 जुलाई– तुलसीदास जयन्ती
- 31 जुलाई– जन्मदिन मुंशी प्रेमचंद–हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखक

जून 2025– अंक में विजयी छात्राएं

कविता/आलेख (जूनियर वर्ग)– 1. प्रथम – अवंतिका वर्मा 8A	**कविता/आलेख (सीनियर वर्ग)–** 1. प्रथम – अवंतिका तिवारी 9A 2. द्वितीय – आयुषी वर्मा 10C 3. तृतीय – आकांक्षा मिश्रा 11A
चित्रांकन (जूनियर वर्ग)– 1. प्रथम – आर्ना शुक्ला 8A 2. द्वितीय – संस्कृति श्रीवास्तव 7A 3. तृतीय – अवंतिका वर्मा 8A	**चित्रांकन (सीनियर वर्ग)–** 1. प्रथम – आशी तिवारी 10C 2. द्वितीय – वैभवी श्रीवास्तव 9A 3. तृतीय – सोनाक्षी मौर्या 9B

विद्यालय उपलब्धि

बहिन अंजलि

बहिन सृष्टि तिवारी

दिनांक 12 जून, 2025 को कलेक्ट्रेट सभागार लखीमपुर–खीरी में जनपद स्तरीय हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षा–2025 में प्रथम 10 स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को सम्मानित किया गया जिसमें हाईस्कूल परीक्षा–2025 में जनपद में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली विद्यालय की *छात्रा बहिन अंजलि* एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली *छात्रा बहिन सृष्टि तिवारी* को प्रभारी मंत्री मा0 नितिन अग्रवाल, मा0 जिलाधिकारी महोदया तथा मा0 मुख्य विकास अधिकारी द्वारा दोनों छात्राओं को रू.21000/–, एक टेबलेट एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

हमारी गतिविधियाँ

वृक्षारोपण कार्यक्रम – 05.06.2025

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस – 21.06.2025

आचार्य/आचार्या दक्षता वर्ग – 30.06.2025

विद्यालय में आचार्य/आचार्याओं को नवीनतम जानकारी के द्वारा उत्कृष्ट विकास की प्रक्रिया हेतु दक्षता वर्ग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के क्रिया–कलाप आचार्य/आचार्याओं द्वारा सम्पादित किए गए।

राष्ट्र सेविका समिति, आद्य प्रमुख संचालिका
✵ वन्दनीया लक्ष्मी बाई केलकर ✵

लक्ष्मी बाई (कमल) का जन्म 5 जुलाई 1905 तदनुसार अनुसार आषाढ़ शुक्ल दशमी को नागपुर महाराष्ट्र में हुआ था। आपकी माता यशोदा दाते कुशल देशभक्त गृहणी तथा पिता भास्कर राव दाते सरकारी कर्मचारी थे। आपकी शिक्षा मिशनरी स्कूल से हुई परंतु उपासना पद्धति में अपनी संस्कृति की सुगंध ना होने के कारण स्कूल छोड़ दिया। बाद में हिंदू कन्या विद्यालय से पढ़ाई प्रारंभ हुई। कुछ समय बाद परिस्थितिवश पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 14 वर्ष की अल्पायु में आपका विवाह 1919 में पुरुषोत्तम राव केलकर से हुआ जिनकी पहले से ही दो बालिकाएं थी। अब कमल की लक्ष्मी बाई केलकर के नाम से पहचान बनी। पूरे केलकर परिवार में नई वधू के प्रति जिज्ञासा थी कि क्या शादी के पहले दिन से बनी माँ, माँ के कर्तव्य का पालन कर पाएगी। इस प्रश्न का उत्तर न केवल बालिकाओं के सुंदर लालन–पालन से दिया अपितु पति के साथ पूरे परिवार को अपनी सेवा परायणता तथा निष्ठा से अभिभूत कर दिया, यद्यपि यह सरल नहीं था।

पारिवारिक दायित्व संभालते संभालते उन्हें राष्ट्र और समाज की चिंता रहती। इस दृष्टि से स्वाधीनता प्राप्ति हेतु चल रहे आंदोलन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहीं। पारिवारिक जीवन की अपार व्यस्तता के बीच लगभग प्रति 2 वर्ष के अंतराल पर एक बालक को जन्म देकर वह 6 बालकों की माँ बनी। इस प्रकार दो बालिकाएं पहले से तथा छह बालक और के जन्म के उपरांत वह एक बड़े परिवार के दायित्व का निर्वहन, विवाह के साथ ही सतत् कर रही थी। इसी बीच पति असाध्य रोग तपेदिक से ग्रस्त हो गए।

उनको किसी पंडितजी ने बताया कि बरगद के वृक्ष की एक लाख प्रदक्षिणा करने से आपके पति स्वस्थ हो सकते हैं। यह जानकारी होने पर वह घर का बड़ा दायित्व निर्वहन करते हुए एक लाख प्रदक्षिणा पूर्ण की, उनके पैरों में छाले पड़ गए फिर भी उन्होंने एक लाख प्रदक्षिणा पूर्ण की परंतु दुर्दैव से उनके पति का स्वर्गवास 1932 में हो गया। इस समय वंदनीय मौसी जी की आयु मात्र 27 वर्ष थी।

परिवार में दो विधवा पहले से थीं। अब वंदनीया मौसी जी भी वैधव्य को प्राप्ति हुई। घर में पुरुष के रूप में केवल एक देवर था। उसी पर सब भार आ गया परंतु कुछ महीनों बाद ही उन्होंने भी स्वयं को परिवार को अलग कर लिया। यह कहते हुए कि अब मैं इतने लोगों का भार नहीं उठा सकता।

एकमात्र पुरुष द्वारा हाथ खड़े किए जाने पर अब वंदनीय मौसी जी, एकेडमिक शिक्षा बहुत कम होने के बाद भी, परिवार का दायित्व निर्वहन करने के लिए कमर कस ली। कार्य अत्यंत कठिन था सामाजिक रूढ़ियों का दबाव अलग से। उनके पास आर्थिक तंगी के साथ कोई अन्य संबल भी नहीं था। ऐसे में समाज की रूढ़ियों का निर्भीकता से विरोध किया और अपनी बुद्धि कौशल और निश्चल तपस्वी दिनचर्या से, कुछ ही दिनों में परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार कर, स्थिति को ठीक किया। क्योंकि उनके पति एक संभ्रांत परिवार से थे परंतु बीमारी के कारण काफी धन समाप्त हो चुका था परंतु जमीन अभी भी उनके पास थी। ऐसी स्थिति में घर की देखभाल के लिए उन्होंने अपने घर में एक निर्बल महिला को नौकरी पर रखा तो उनके परिवार के साथ–साथ समाज के द्वारा विरोध हुआ। परंतु उन्होंने यह कहकर समझाया कि सभी देशवासी हमारे अपने हैं, सब में माँ भारती का रक्त बह रहा है। यह बात वंदनीय मौसी जी ने समाज के सामने दृढ़तापूर्वक समझाया जो लोगों के समझ में भी आया।

एक बार उनकी जमीन पर तहसीलदार अंग्रेजों की नजर थी तो उन्होंने उसकी कुड़की करवाने की योजना कर डाली परंतु मौसी ने एक प्रार्थना पत्र सीधे कलेक्टर को दिया और वस्तुस्थिति से अवगत कराया कि उनको लगान भरने की कोई नोटिस नहीं दी गई जो की देना चाहिए था। अतः हमें 15 दिनों का समय और दिया जाए।

इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए कलेक्टर महोदय ने अपनी स्वीकृति मौसी जी के पक्ष में दे दी। इस प्रकार मौसी जी ने अपनी बौद्धिक कुशलता के आधार पर अकेले ही अंग्रेजों को चुनौती देकर अपनी भूमि को नीलाम होने से बचा लिया। ऐसे अनेक को अपार क्षमताओं और गुणो की धनी, कर्मठ, राष्ट्रभक्ति और एक महिला में जिन–जिन गुणों का समावेश होना चाहिए, वह सब उनमें ईश्वर ने प्रचुरता से भरे थे।

परिवार की चिंता के साथ–साथ उनका राष्ट्र एवं समाज का चिंतन भी चलता था। देश के गुलाम मानसिकता और महिलाओं में देश के प्रति उदासीन विचार, मौसी जी को लगातार कुछ करने हेतु प्रेरित कर रहे थे। क्योंकि उनको पुस्तक पढ़ने की आदत थी, घर का काम रात्रि 11 तक समाप्त करके वह सतत् स्वाध्याय करती थी। एक दिन उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी की एक घटना पढ़ी जिसमें भगिनी निवेदिता भी उपस्थित थी, वह कह रहे थे– "यदि देश पर सब कुछ न्योछावर करने वाले 20 युवा हमें मिल जाए तो मैं देश की

स्थिति बदल सकता हूं।" तब भगिनी निवेदिता ने पूछा कि, "क्या उन 20 में मैं भी एक हो सकती हूं", तो स्वामी विवेकानंद ने कहा, "हाँ बिल्कुल आप हो सकती हैं।" विवेकानंद जी ने समझाया कि जिस प्रकार बलशाली गरुड़ का एक पँख कमजोर हो तो वह अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच सकता। उसी प्रकार यदि समाज के दो घटक महिला और पुरुष, उनमें यदि कोई एक कमजोर होगा तो, राष्ट्र परम वैभव नहीं प्राप्त कर सकता। उनका यह उत्तर लक्ष्मी बाई की चिंता को समाधान दे गया।

उन्होंने इस दिशा में चिंतन करना प्रारंभ किया। महात्मा गांधी के आंदोलनों और सभाओं में वह लगातार अपनी सक्रियता बढ़ा रही थी और परिवार भी साथ में पटरी पर आ रहा था। परिवार में उनकी जेठानी से उनका माँ बेटी सा तथा देवरानी से बहन का रिश्ता था। वह भी उनके विचारों की सहभागी बन रही थी। बच्चे भी बड़े हो रहे थे और उनका बेटा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाने लगा और उनकी दृष्टि ने अपने बेटों के कुछ गुणो में सकारात्मक परिवर्तन देखा और उनको लगा कि उनका बच्चा प्रतिदिन कहीं तो अच्छी जगह जाता है। इस प्रकार वह डॉक्टर हेडगेवार जी से भी मिली। राष्ट्रीय दायित्व के प्रति सजग एक महिला जब परम पूज्य हेडगेवार जी से मिली, तो उन्होंने पूछा कि आप यह संगठन किसलिए चला रहे हैं, तब उन्होंने बताया कि राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के लिए। लक्ष्मी बाई थोड़ी देर चुप रही फिर बोलीं आपका यह कार्य कभी सफल नहीं होगा। उन्होंने पूछा क्यों? तो लक्ष्मी बाई ने उत्तर दिया कि समाज के दो घटक हैं। यदि एक घटक कमजोर रहा तो समाज एवं राष्ट्र कैसे अपने परम स्थिति को प्राप्त कर सकता है। डॉक्टर हेडगेवार जी थोड़ा गंभीर हुए। उन्होंने लक्ष्मी बाई जी को दोबारा मिलने के लिए कहा। कुछ दिन बाद सूचना मिलने पर पुनः वह उनसे मिलीं और उन्होंने महिलाओं का एक स्वतंत्र संगठन निर्माण करने क़ी इच्छा व्यक्त की और जब तक उनक़ी रीति– नीति आदि ठीक प्रकार से स्थापित नहीं होती, तब तक संघ से कुछ सहयोग की अपेक्षा की। डॉक्टर हेडगेवार जी ने बड़ी ही आत्मीयता से सहयोग दिया और कहा कि आप जितनी शीघ्रता से अपना संगठन अपने पैरों पर खड़ा करेंगीं उतना अच्छा रहेगा।

ऐसा कहकर कुछ दिन बाद कुछ बहनों भाइयों के साथ डॉक्टर हेडगेवर जी व वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर के साथ बैठक की गई। संगठन का नाम राष्ट्र सेविका समिति तय हुआ। क्योंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं राष्ट्र सेविका समिति समवैचारिक संगठन हैं, दोनों का उद्देश्य एक है। अस्तु दोनों का संक्षिप्त रूप RSS ही हो, ऐसा सुझाव डॉक्टर हेडगेवार जी ने दिया था। डॉक्टर हेडगेवार जी ने बड़ी आत्मीयता से बड़े भाई की भूमिका निभाई, जो आज भी बहने अपने ह्रदय में अनुभव करती हैं। जैसे गंगा का प्रवाह सतत् और अक्षुण्ण है, वैसे ही रूप बदला परंतु पवित्र प्रवाह शाश्वत है और माँ भारती को चरणों की ओर प्रवाहवान है।

आज राष्ट्र सेविका समिति अखिल भारतीय महिलाओं का विश्व में सबसे बड़ा संगठन है। जिस पर हमें गर्व है। इस प्रकार 1936 में विजयदशमी के अवसर पर महाराष्ट्र के वर्धा जिले में राष्ट्र सेविका समिति की विधिवत स्थापना हुई। इस प्रकार वंदनीय लक्ष्मी बाई केलकर जिनको प्यार से समिति की सेविकाएं मौसी जी कहती हैं।

राष्ट्र सेविका समिति की आज दैनिक/साप्ताहिक 5215 शाखाएं लगती हैं। जिसमें योग, व्यायाम, संगीत, बौद्धिक चर्चा, शारीरिक तथा जूडो आदि की गतिविधियाँ होती हैं। पूरे भारत में लगभग 1800 से अधिक सेवा कार्य चल रहे हैं। प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य, कोरोना काल में राहत कार्य, शव दाह में भी सेविकाओं ने सहभागिता की तथा डिजिटल कक्षाएं आदि कार्य कर रही थीं। समिति आज अनेकों क्षेत्र में महिलाओं के बीच सक्रिय है।

उनका मानना था कि सीता का चरित्र स्वयं राम का निर्माण कर सकता है। इसलिए उनका विचार था कि महिलाओं में प्रमुख रूप से तीन गुणों – नेतृत्व, कर्तृत्व तथा मातृत्व का समावेश होना चाहिए और उनके उदाहरण भी दिए जो क्रमशः झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, पुण्यश्लोका लोकमाता अहिल्याबाई होलकर, राजमाता जीजाबाई को आदर्श के रूप में रखा।

प्रातः स्मरणीय महिलाएं जिनका चरित्र नित्य हमारे जीवन को प्रेरणा देता है, ऐसा संगठन का स्वरूप हम सबको वंदनीय मौसी जी के कारण प्राप्त हुआ हैं, जिस पर सतत् चलकर हम भी अपने जीवन के कुछ पल अपनी भारत माता के चरणों में समर्पित कर सकते हैं। वंदनीय मौसी जी के चरणों में कोटि–कोटि वंदन करते हुए लेखनी को विराम देती हूँ।

❀❀❀❀❀❀❀❀❀

वंदनीय मौसी जी 'शक्ति रूपा' नारी की उच्च से उच्चतर भूमिका का चिंतन करते हुए कहती थीं – "स्त्री अपनी गुण शीलता से अपने परिवार एवं समाज के साथ राष्ट्ररथ की सारथी बन सकती है।"

–वंदनीया लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी)

यशोधरा आर्य
प्रान्त कार्यवाहिका
लखनऊ।

गुरु पूर्णिमा का महत्व

"गुरु वह नहीं जो शिष्य का सिर अपने पैरों में झुका दे, बल्कि वह है जो शिष्य का सिर गर्व से ऊँचा कर दे।"। *– स्वामी विवेकानंद*

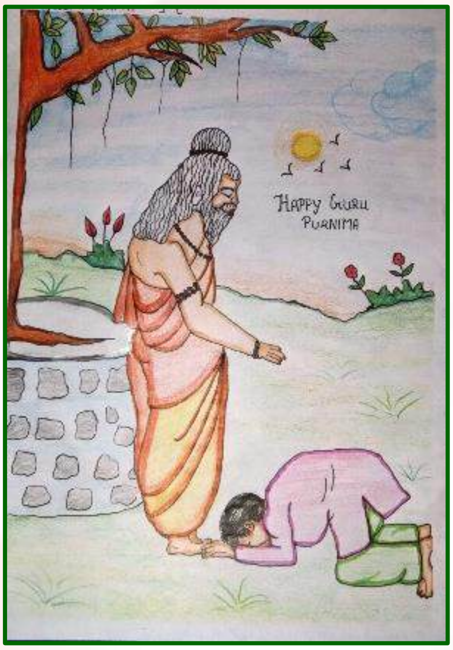

चित्रांकन–आयुषी वर्मा–10C

भूमिका –

गुरु का स्थान जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। हमारी माँ हमारी प्रथम गुरु होती है। पिता द्वितीय गुरु होते हैं और जब हम विद्यालय जाते हैं तो वहाँ हमें शिक्षक के रूप में कई गुरु मिलते हैं जो हमारे जीवन को सही दिशा प्रदान कर हमें एक अच्छा इंसान बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। वे न केवल हमें शिक्षा देते हैं, बल्कि जीवन की सही दिशा भी दिखाते हैं। गुरु पूर्णिमा का पर्व इन्हीं गुरुओं के सम्मान और आभार को व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।

गुरु पूर्णिमा का ऐतिहासिक महत्त्व –

गुरु पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि को मनाई जाती है। इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है, क्योंकि इसी दिन महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ था। उन्होंने चारों वेदों का संकलन किया, 18 पुराणों की रचना की और महाभारत जैसे महान ग्रंथ को समाज को दिया। वे न केवल विद्वान थे, बल्कि गुरु परंपरा के सबसे प्राचीन स्तंभ माने जाते हैं।

बौद्ध धर्म में यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि इसी दिन भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया था। यह दिन जैन धर्म में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भगवान महावीर ने इसी दिन अपने पहले शिष्य इंद्रभूति गौतम को दीक्षा दी थी। यह दिन शिष्य और गुरु के संबंध को मजबूत करने वाला पर्व है।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि माना गया है। 'गु' का अर्थ है अंधकार एवं 'रु' का अर्थ है प्रकाश। अर्थात् गुरु वह दीपक हैं जो अज्ञान के अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। गुरु पूर्णिमा एक ऐसा पावन पर्व है जो गुरु को समर्पित होता है। यह दिन गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर होता है। गुरु किसी भी समाज की रीढ़ होते हैं। वे केवल किताबी ज्ञान नहीं देते, बल्कि जीवन जीने की

कला भी सिखाते हैं। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली हो या आज के आधुनिक विद्यालय, गुरु का स्थान आज भी अटूट है। वे छात्रों में न केवल कौशल विकसित करते हैं, बल्कि चरित्र, अनुशासन और आत्म–विश्वास भी भरते हैं। वे न केवल शिक्षा देते हैं, बल्कि हमारे जीवन को एक दिशा भी प्रदान करते हैं। वे हमारे अंदर छिपी संभावनाओं को पहचानकर उसे विकसित करते हैं। हमारे वेद–पुराणों में भी कहा गया है :–

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

इस श्लोक से स्पष्ट होता है कि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूजनीय माना गया है।

गुरु पूर्णिमा का आध्यात्मिक महत्त्व –

यह पर्व छात्रों के साथ–साथ आध्यात्मिक साधकों के लिए भी बहुत महत्व रखता है। इस दिन अनेक लोग अपने आध्यात्मिक गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। विद्यालयों और गुरुकुलों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों को उपहार देते हैं, उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं और उनकी सेवा करते हैं। बहुत से लोग अपने आध्यात्मिक गुरुओं के सान्निध्य में साधना और ध्यान करते हैं क्योंकि गुरु ही इस संसार सागर से पार जाने में शिष्य की सहायता करता है, उसे सांसारिक विषय–वासनाओं से मुक्त होने का उपाय बताता है। इसलिए गुरु पूर्णिमा केवल बाह्य सम्मान का नहीं, बल्कि आत्म–चिंतन का भी दिन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जीवन में सच्चा गुरु वह है जो हमें स्वयं से मिलवाता है। ध्यान, साधना, योग और सेवा के माध्यम से हम अपने अंदर छिपे अज्ञान को मिटा सकते हैं और गुरु के दिखाए मार्ग पर चलकर आत्मिक विकास कर सकते हैं।

अपने शिष्य का आत्मिक विकास गुरु का लक्ष्य होता है । वह शिष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे संसार सागर से मुक्त करने का प्रयास करते हैं । यदि शिष्य को सदगुरू की प्राप्ति हो गई तो समझिए उसका मानव जीवन सार्थक हो गया। सांसारिक प्रलोभन मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाने का काम करते हैं। यह गुरु ही है जो शिष्य का मार्गदर्शन कर उसे सत्य मार्ग पर ले जाता है।

यह पर्व समाज में गुरु–शिष्य के पवित्र संबंध को मजबूत करता है। यह एक ऐसा अवसर है जब विद्यार्थी अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं और उनके उपदेशों का पालन करने का संकल्प लेते हैं।

इस पर्व के द्वारा संस्कृति का संरक्षण होता है। गुरु शास्त्र, कला, संगीत, नृत्य आदि भारतीय ज्ञान परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। इसलिए यह पर्व हमारी संस्कृति को जीवित रखने में सहायक है।

शांति और नैतिकता का संदेश भी यह पर्व प्रेषित करता है । गुरु न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। ईमानदारी, सत्य, दया, आत्म–अनुशासन, आत्म–नियंत्रण जैसे गुणों को विकसित करने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि गुरु पूर्णिमा केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि यह एक भावना है, एक अवसर है, अपने जीवन में ज्ञान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का। हमें अपने गुरुजनों का सदा आदर करना चाहिए, क्योंकि वही हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाते हैं। गुरु का मार्गदर्शन ही जीवन में सफलता की कुंजी है। आज के समय में जब सभी लोग सांसारिक सुखों के लिए भाग रहे हैं, किसी भी अनैतिक तरीके से सफल होना चाहते हैं, ऐसे समय में एक सद्गुरु की कृपा अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वही हमें असत्य से सत्य की ओर ले जाने में समर्थ हैं।

कबीरदास जी कहते हैं:

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय॥"

इसका अर्थ है कि जब भगवान और गुरु दोनों सामने खड़े हों, तो किसे प्रणाम करें? कबीरदास जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु को प्रणाम करूंगा, जिन्होंने मुझे भगवान से मिलाया।

इस प्रकार हम सभी गुरु की महिमा को महसूस कर सकते हैं। इस पर्व पर एक संकल्प लेना होगा कि हमें अपने गुरु का सम्मान करना है और उनके प्रति श्रद्धा और समर्पण रखना है।

गूगल, विकिपीडिया आदि आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर हम असंख्य सूचनाएँ तो संकलित कर सकते हैं वास्तविक ज्ञान नहीं। विवेक–शक्ति का जागरण, आत्म–विकास, सत्यमार्ग का चयन, इंद्रिय–प्रशिक्षण, अपनी कमियों को दूर करना आदि कर्म हम गुरु कृपा के बिना नहीं कर सकते हैं। इसलिए गुरु का स्थान कोई नहीं ले सकता है।

जहाँ गुरु का प्रकाश है,
वहीं जीवन में सच्चा विकास है।"

डॉ0 विशाल द्विवेदी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
बी0एड0 विभाग
वाई0डी0पी0जी0 कॉलेज,
लखीमपुर–खीरी।

❋ 09 जुलाई– राष्ट्रीय छात्र दिवस पर विशेष ❋

- *ज्ञान, शील एवं एकता की जली मशाल।*

9 जुलाई, 1949 को स्थापित "छात्र शक्ति, राष्ट्र शक्ति" की प्रबल हुंकार करने वाला, ज्ञान, शील, चारित्र्य एकता का प्रबल पक्षधर, देश का सबसे बड़ा छात्र–अध्यापक संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपने जीवन के 76 वर्ष पूरे कर रहा है। छात्र शक्ति की रचनात्मक कार्य दिशा का प्रबल पक्षधर, युवाओं की ऊर्जा को सम्पूर्ण राष्ट्र के व्यापक पुनर्निर्माण में लगाने वाला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों के मध्य एक सुन्दर, स्वस्थ संवाद स्थापित कर परस्पर विश्वास, सहयोग, समन्वय एवं सौहार्द स्थापित कर पाने में सफल सिद्ध हुआ है। विद्यार्थी परिषद की सबसे बड़ी ताकत, सबसे बड़ी पूंजी उसकी समाज में विश्वसनीयता, प्रमाणिकता एवं कुछ प्रतिबद्धताएँ रही हैं। राष्ट्र सबसे पहले, राष्ट्र सबसे ऊपर, राष्ट्र की पहचान उसकी सनातन संस्कृति, शाश्वत, कालजयी जीवन मूल्यों से रही है। देश की शिक्षा शिक्षाविदों के हाथों में हो, शिक्षा क्षेत्र की स्वायत्तता, राजनैतिक एवं कॉरपोरेट प्रभावों से मुक्त रखना, ऐसी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की शुरू से ही अभिलाषा है। राष्ट्र की सनातन, कालजयी सांस्कृतिक चेतना से राष्ट्र के युवाओं को जोड़ना, उनमें समझदारी, जिम्मेदारी एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के व्यापक पुनर्निर्माण में अपनी व्यापक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का स्वप्न एवं संकल्प है। राष्ट्र के युवाओं में राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक समरसता, प्रखर राष्ट्रवाद का विकास हो ऐसी उसकी दिव्य अनुभूति है। उसके प्रेरणा स्रोत युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द हैं।

❋ कर्म आधारित वर्णाश्रमी समाज, नयी चेतना का पुरातन स्रोत ❋

जब समाज दिशाहीन हो जाए, तब उसे केवल नारे नहीं, चरित्र चाहिए और उस चरित्र की नींव ब्राह्मणोचित तप, क्षत्रिय तेज, वैश्य की उदारता और शूद्र की सेवा–भावना से ही रखी जा सकती है। समाज को फिर से उस प्राचीन संतुलन की आवश्यकता है, जहाँ ब्राह्मण का ज्ञान केवल आत्मकल्याण नहीं, अपितु जनकल्याण का मार्गदर्शक हो। जहाँ क्षत्रिय का पराक्रम केवल पद और प्रतिष्ठा के लिए नहीं, संपूर्ण समाज की रक्षा हेतु हो, वैश्य की संपत्ति केवल अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि भूखे की थाली और नंगे के तन का संबल बने; और शूद्र का सेवा भाव केवल दायित्व नहीं, बल्कि श्रद्धा बन जाए। यदि नगर का एक भी व्यक्ति भूखा सो जाए तो समाज का वैश्य वर्ग उत्तरदायी होता था। किसी भी कार्य को छोटा नहीं माना जाता था। यह थी हमारी सनातन व्यवस्था, जिसने हज़ारों वर्षों तक भारत को एक सभ्य, सुसंस्कृत राष्ट्र के रूप में स्थिर रखा। आज का सबसे बड़ा संकट है– ब्राह्मणविहीन हिंदुत्व की मानसिकता। ब्राह्मण का अर्थ केवल यज्ञोपवीतधारी नहीं, अपितु ज्ञान, तप और संयम की मूर्ति है। जब समाज ज्ञानविहीन होगा, तो केवल पराक्रम से वह रक्षित नहीं रह पाएगा। यह सनातन संस्कृति पर सीधा आघात है। किसी भी बनी–बनाई व्यवस्था में त्रुटियाँ खोजना सरल है, पर उसका संतुलित विकल्प खोजना कठिन। वर्ण व्यवस्था को केवल जातीय चश्मे से नहीं, सांस्कृतिक संतुलन के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। यह कोई अतीत की गाथा नहीं, अपितु आने वाले भारत की भावी रूपरेखा है, जिसमें हर व्यक्ति को कर्म मिले और हर कर्म को कर्मयोगी। धर्म, शौर्य, सेवा और समर्पण, यही हो भारत के नवसमाज की पहचान।

राजेश दीक्षित
सामाजिक कार्यकर्ता

✵ कारगिल विजय दिवस: शौर्य, बलिदान और अदम्य विजय का प्रतीक ✵

हर साल 26 जुलाई को भारत कारगिल विजय दिवस मनाता है, जो ऑपरेशन विजय में भारतीय सशस्त्र बलों की शानदार जीत का सम्मान करता है। यह दिन उन वीर सैनिकों के अदम्य साहस, असाधारण बलिदान और अदम्य भावना को याद करने का अवसर है जिन्होंने 1999 में कारगिल की बर्फीली ऊंचाइयों पर अपनी जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा की थी।

कारगिल युद्ध की पृष्ठभूमि –

1999 की शुरुआत में, पाकिस्तान के सैनिकों और आतंकवादियों ने नियंत्रण रेखा (LOC) के इस पार घुसपैठ कर रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भारतीय चौकियों पर कब्जा कर लिया था। उनका उद्देश्य श्रीनगर–लेह राष्ट्रीय राजमार्ग को बाधित करना और सियाचिन ग्लेशियर से भारतीय सैनिकों की वापसी के लिए दबाव बनाना था। भारतीय खुफिया एजेंसियों को इस घुसपैठ का देर से पता चला, जिसके बाद भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय शुरू किया।

ऑपरेशन विजय: एक अदम्य चुनौती –

कारगिल युद्ध अद्वितीय चुनौतियों से भरा था। दुश्मन फायदे में था क्योंकि वे ऊँची चोटियों पर कब्जा जमाए बैठे थे, जिससे उन्हें भारतीय सैनिकों पर स्पष्ट लाभ मिल रहा था। भारतीय सैनिकों को अत्यधिक ऊँचाई, प्रतिकूल मौसम और दुश्मन की गोलीबारी का सामना करते हुए ऊपर की ओर चढ़ाई करनी पड़ी। यह युद्ध मुख्य रूप से तोपखाने और पैदल सेना द्वारा लड़ा गया था, जिसमें भारतीय वायु सेना ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भारतीय सेना ने द्रास, कारगिल, बटालिक और मश्कोह सेक्टरों में भीषण लड़ाई लड़ी। टाइगर हिल, तोलोलिंग और प्वाइंट 4875 (बत्रा टॉप) जैसे स्थान गहन लड़ाई के गवाह बने, जहाँ भारतीय सैनिकों ने अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया।

वीर नायकों के प्रेरक प्रसंग –

कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने न केवल अपनी जान हथेली पर रखी, बल्कि ऐसे उदाहरण भी पेश किए जो हमें हमेशा प्रेरित करते रहेंगे:

कैप्टन विक्रम बत्रा (परमवीर चक्र): "ये दिल मांगे मोर" का नारा देने वाले कैप्टन बत्रा भारतीय सेना के सबसे प्रेरक नायकों में से एक हैं। टाइगर हिल पर दुश्मन के बंकरों को साफ करते हुए उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया। अपने घायल साथी को बचाते हुए, उन्होंने दुश्मन की गोली लगने के बावजूद पीछे हटने से इनकार कर दिया और अंततः शहादत को प्राप्त हुए। उनकी आखिरी बात थी, "मैं भारतीय तिरंगा फहराकर ही वापस आऊँगा, या फिर उसमें लिपटकर आऊँगा।"

लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे (परमवीर चक्र): गोरखा राइफल्स के इस वीर अधिकारी ने खाली पेट भी दुश्मन से लोहा लिया। खालुबार टॉप पर दुश्मन की पोस्ट पर हमला करते हुए, लेफ्टिनेंट पांडे ने व्यक्तिगत रूप से दुश्मनों का सफाया किया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, उन्होंने अंतिम सांस तक अपने साथियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनके अंतिम शब्द थे, "न छोड़ना दुश्मन को!"

राइफलमैन संजय कुमार (परमवीर चक्र): मुश्कोह घाटी में प्वाइंट 4875 पर एक दुश्मन बंकर को निशाना बनाने के लिए राइफलमैन संजय कुमार ने अत्यधिक साहस दिखाया। अपने सिर पर गोली लगने के बावजूद, उन्होंने दुश्मन के बंकर की ओर दौड़ना जारी रखा और उसे ग्रेनेड से नष्ट कर दिया। इसके बाद उन्होंने घायल अवस्था में भी दूसरे बंकर पर धावा बोल दिया, जिससे दुश्मन भागने पर मजबूर हो गया।

ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव (परमवीर चक्र): टाइगर हिल पर एक महत्वपूर्ण बंकर पर हमला करने के लिए ग्रेनेडियर यादव ने एक सीधी चट्टान पर अकेले चढ़ाई की। दुश्मनों की भीषण गोलीबारी का सामना करते हुए उन्होंने कई गोलियाँ लगने के बावजूद हार नहीं मानी। उन्होंने घायल अवस्था में भी दुश्मन के बंकरों को नष्ट किया और अपने साथियों के लिए रास्ता साफ किया। वह कारगिल युद्ध के सबसे कम उम्र के परमवीर चक्र विजेता थे। इन बहादुरों ने 'ये दिल मांगे मोर' और 'हम जीतेंगे' जैसे नारों के साथ अंतिम साँस तक लड़ाई लड़ी, जो आज भी हर भारतीय को प्रेरित करते हैं।

विजय और उसके बाद –

लगभग दो महीने तक चले इस भीषण युद्ध के बाद, भारतीय सेना ने दुश्मन को भारतीय क्षेत्र से पूरी तरह खदेड़ दिया और सभी चौकियों पर फिर से कब्जा कर लिया। 26 जुलाई, 1999 को भारत ने कारगिल में अपनी विजय की घोषणा की। इस जीत ने न केवल देश की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा की, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने पाकिस्तान के धोखे को भी उजागर किया।

कारगिल विजय दिवस का महत्व –

कारगिल विजय दिवस केवल एक युद्ध की जीत का जश्न नहीं है, बल्कि यह उन सभी सैनिकों को श्रद्धांजलि है जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यह दिन हमें उनके बलिदान, राष्ट्र के प्रति उनके अटूट समर्पण और उनके द्वारा स्थापित किए गए उच्च आदर्शों की याद दिलाता है।

यह हमें यह भी याद दिलाता है कि स्वतंत्रता सस्ती नहीं आती है, और इसकी रक्षा के लिए निरंतर सतर्कता और बलिदान की आवश्यकता होती है। कारगिल विजय दिवस हमें अपनी सेना पर गर्व करने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करता है कि हम हमेशा उनके योगदान को याद रखें और उन्हें सम्मान दें।

जय हिंद!

डॉ. विजय कुमार शुक्ल
प्रवक्ता, वाणिज्य

✵ विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस ✵

"मुझसे ही जुड़ा है जीवन,
खेत, बगीचे, सारे उपवन।
सरिता, सागर, ताल तलैया,
बिन मेरे सब खाली भैया।
चलते रोको कुल्हार,
प्रकृति करती है मनुहार।
मानव कर न मेरा संहार।
प्रकृति करती है मनुहार,
मानव कर न मेरा संहार।"

हर साल 28 जुलाई को दुनिया भर के लोग प्रकृति संरक्षण को हमारे ग्रह की देखभाल और सुरक्षा के सबसे बेहतरीन तरीकों में से एक के रूप में मनाते हैं।

यह दिन ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्वपूर्ण महत्व की याद दिलाता है और उन लोगों के प्रयासों और सफलताओं को पहचानता है जो हर दिन प्रकृति को बचाते हैं।

प्रकृति की रक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बारे में जागरुकता बढ़ाई जा सके ताकि पृथ्वी को जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के खतरे से बचाया जा सके। यह इस बात को स्वीकार करता है कि एक स्वस्थ्य पर्यावरण एक स्थिर और स्वस्थ समाज की नींव है।

जल, जंगल और जमीन इन तीनों तत्वों के बिना प्रकृति अधूरी है। विश्व में सबसे समृद्ध देश वही हुए हैं, जहाँ यह तीनों तत्व प्रचुर मात्रा में हैं। भारत देश जंगल, वन्य जीवों के लिए प्रसिद्ध है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रयास –

- जंगलों को न काटें।
- जमीन में उपलब्ध पानी का उपयोग तब ही करे जब आपको जरूरत हो।
- जैविक खाद का प्रयोग।
- डिब्बा–बंद पदार्थों का कम इस्तेमाल।
- पहाड़ खत्म करने की साजिशों का विरोध करें।
- प्लास्टिक के लिफाफे छोड़ें। कागज, कपड़े के थैले इस्तेमाल करें।
- ज्यादा पैदल चलें, अधिक साइकिल चलाएं।
- वर्षा जल संरक्षण प्रबन्धन।

निधि सिंह
प्रवक्ता, जीव विज्ञान

गोस्वामी तुलसीदास

कविता करके तुलसी न लसे। कविता लसी पा तुलसी की कथा।।

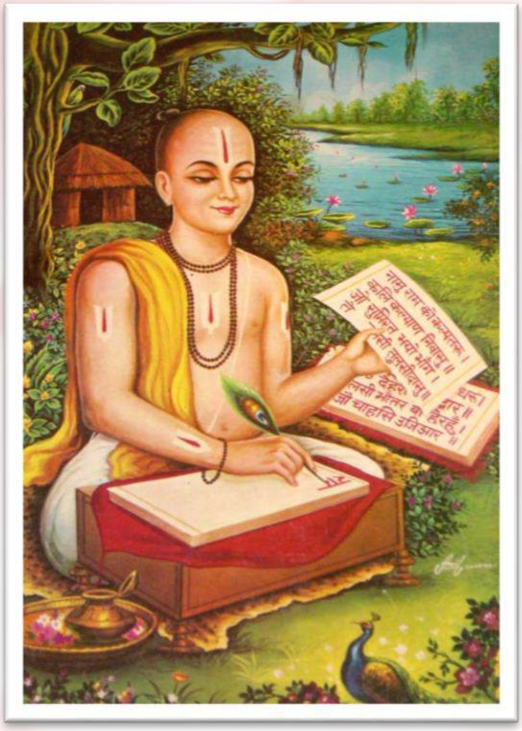

सम्पूर्ण जगत को रामभक्तिरूपी अमृतधारा से सिञ्चित करने वाले रामभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सन् 1497 ई. में उत्तर प्रदेश के राजापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 आत्मा राम दुबे था इनकी माता का नाम हुलसी था। बचपन से ही माता–पिता का विरह होने के कारण इनका पालन–पोषण सन्त नरहरिदास जी के द्वारा किया गया। सत्संगति प्राप्त होने के कारण इनका जीवन सात्विक प्रवृत्तियों से युक्त था। सन्त नरहरिदास जी ने इनको शास्त्रों एवं विविध पुराणों की शिक्षा प्रदान की।

गोस्वामी तुलसीदास जी का विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। ये अपनी पत्नी को अत्याधिक प्रेम करते थे और इसी प्रेम के वशीभूत होकर ये अपनी पत्नी से मिलने मायके चले गये। पति को अकस्मात् अपने मायके में देखकर रत्नावली ने उन्हें अत्यन्त कठोर वचन बोले जिससे तुलसीदास जी का पत्नी के प्रति मोह भंग हो गया और संसार की नश्वरता का ज्ञान होने पर ये रामभक्ति की ओर उन्मुख हुए।

सांसारिक कष्टों से पीड़ित जनमानस को तुलसीदास जी ने भगवान श्रीरामचन्द्र जी के लोकमंगलकारी स्वरूप के दर्शन कराये। अपनी रचनाओं के माध्यम से निराशा के अन्धकार में डूबी जनता को मंगलकारी ज्ञान प्रदान किया एवं संसार में अद्भुत शक्ति एवं अपूर्व आशा का संचार किया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी अनेक काव्य कृतियों से संसार को एक नवीन दिशा प्रदान की। इसी क्रम में इनके द्वारा रचित महाकाव्य श्रीरामचरितमानस का अपना विशिष्ट महत्व है क्योंकि यह केवल एक महाकाव्य नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। जीवन की विविध समस्याओं के उत्तर एवं समाधान हमें रामचरितमानस में प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन एवं इनकी रचनाएँ समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

डॉ0 अनुराधा दुबे
प्रवक्ता, हिन्दी

❋ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ❋

बाल गंगाधर तिलक, जिन्हें आमतौर पर लोकमान्य तिलक के नाम से जाना जाता है, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक नेता थे और वे उग्रवादी दल से जुड़े थे।

निजी जीवन – केशव गंगाधर तिलक का जन्म 1856 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। पुणे से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त गणित के अध्यापक के रूप में भी काम किया, बाद में पत्रकार के रूप में काम करना शुरू किया और स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में शामिल हो गए। 1920 में 64 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

लोकमान्य तिलक के जीवन से जुड़े दो रोचक प्रसंग जो हमें प्रेरित करते हैं–

प्रसंग 1 – लोकमान्य तिलक बचपन से ही साहसी और निडर थे। गणित और संस्कृत उनके प्रिय विषय थे। स्कूल में जब उनकी परीक्षाएँ होती, तब गणित के पेपर में वे हमेशा कठिन सवालों को हल करना ही पसंद करते थे।

उनकी इस आदत के बारे में उनके एक मित्र ने कहा कि, "तुम हमेशा कठिन सवालों को ही क्यों हल करते हो? अगर तुम सरल सवालों को हल करोगे तो तुम्हें परीक्षा में ज्यादा अंक मिलेंगे।" इस पर तिलक ने जवाब दिया कि, "मैं ज्यादा से ज्यादा सीखना चाहता हूँ इसलिए कठिन सवालों को हल करता हूँ। अगर हम हमेशा ऐसे काम ही करते रहेगें, जो हमें सरल लगते हैं तो हम कभी कुछ नया नहीं सीख पाएंगे।"

यही बात हमारी जिंदगी पर भी लागू होती है, अगर हम हमेशा आसान विषय, सरल सवाल और साधारण काम की तलाश में लगे रहेंगे तो कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगें।

प्रसंग 2 – बाल गंगाधर तिलक के स्कूल जीवन की एक और यादगार घटना है। एक बार उनकी कक्षा के सारे बच्चे बैठे मूंगफली खा रहे थे। उन लोगों ने मूंगफली के छिलके कक्षा में ही फेंक दिए और चारों और गंदगी फैला दी।

कुछ देर बाद जब उनके शिक्षक कक्षा में आए तो कक्षा को गंदा देखकर बहुत नाराज हो गए। उन्होंने अपनी छड़ी निकाली और लाइन से सारे बच्चों की हथेली पर छड़ी से 2–2 बार मारने लगे। जब तिलक की बारी आई तो उन्होंने मार खाने के लिए अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया। जब शिक्षक ने कहा कि अपना हाथ बढ़ाओ, तब उन्होंने कहा कि, "मैंने कक्षा को गंदा नहीं किया है इसलिए मैं मार नहीं खाऊँगा।" उनकी बात सुनकर टीचर का गुस्सा और बढ़ गया। टीचर ने उनकी शिकायत प्राचार्य से कर दी। इसके बाद तिलक के घर पर उनकी शिकायत पहुँची और उनके पिताजी को स्कूल आना पड़ा। स्कूल आकर तिलक के पिता ने बताया कि उनके बेटे के पास पैसे ही नहीं थे वो मूंगफली नहीं खरीद सकता था। बाल गंगाधर तिलक अपने जीवन में कभी भी अन्याय के सामने नहीं झुके।

उस दिन अगर शिक्षक के डर से तिलक ने स्कूल में मार खा ली होती तो शायद उनके अंदर का साहस बचपन में ही समाप्त हो जाता।

तुमने गीता का रहस्य भी,
बड़ी सरलता से समझाया।
मिटा अविद्या अधंकार को,
नवल ज्ञान का दीप जलाया।

स्वतन्त्रता अधिकार जन्म से,
दिया यही जन–जन को नारा।
तिलक बाल गंगाधर तुमको,
शत–शत बार प्रणाम हमारा।।

प्रीती अग्रवाल
सहायक आचार्या

मुंशी प्रेमचंद

सोने और खाने का नाम ज़िंदगी नहीं है, आगे बढ़ते रहने की लगन का नाम ज़िंदगी है।

— मुंशी प्रेमचंद

प्रेमचंद जी की एक प्रसिद्ध भारतीय लेखक थे, जिनका मूल नाम 'धनपतराय श्रीवास्तव' था। जिनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को उ0प्र0 के वाराणसी जिले के लमही गाँव में हुआ था। आपको हिन्दी और उर्दू साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए जाना जाता है। इनके पिता का नाम मुंशी अजायबराय और माता का नराम आनन्दी देवी था।

उन्होंने जीवन की शुरुआत एक अध्यापक के रूप में की और बाद में सरकारी नौकरी भी की।

प्रेमचंद जी हिन्दी साहित्य में एक महान उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने लेखन के द्वारा समाज में एक बहुत बड़ा बदलाव लाने का काम किया। आपने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा दी और अपनी रचनाओं के द्वारा समाज को जागरुक भी किया। आपकी रचनाओं में जीवन की सच्चाई और जनसामान्य की छोटी–छोटी समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। रचनाओं को पढ़कर पाठक उसी यथार्थ में डूब जाता है।

प्रेमचंद जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं–

उपन्यास — सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान।

कहानियाँ — पूस की रात, कफन, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, मन्त्र, दो बैलों की कथा आदि।

प्रेमचंद ने साहित्यिक पत्रिका 'हंस' और समाचार पत्र 'जागरण' का भी संपादन किया। वे उर्दू पत्रिका 'जमाना' में नवाबराय के नाम से लिखते थे।

उन्होंने कई फिल्मों की पटकथायें भी लिखीं। साहित्यिक जीवन से हटकर उनके व्यक्तिगत जीवन के कुछ पहलुओं को अगर देखें तो पता चलता है कि वे कितने विनोदी और मनमौजी स्वभाव के थे– *एक बार की बात है कि इनके स्कूल का निरीक्षण करने निरीक्षक महोदय आये तो स्कूल में तो उन्होंने खूब सम्मान दिया वही जब बाहर मिले तो उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया इस पर निरीक्षक महोदय ने शिकायत की तो उनका जवाब था कि "मेरी नौकरी स्कूल तक है, बाकी मैं अपने घर का बादशाह हूँ।"*

प्रेमचंद जी हमेशा अंधविश्वास के खिलाफ बात करते थे — एक बार की बात है उनकी पत्नी भगवान का सहारा लेकर अपनी बात रखती हैं, इस पर वे कहते हैं– "भगवान मन का भूत है, जो इंसान को कमजोर कर देता है। स्वावलम्बी मनुष्य की ही दुनिया है। अंधविश्वास में पड़ने से तो रही–सही अक्ल भी चली जाती है।"

प्रेमचंद जी ने कर्म को ही अपना भगवान माना और निरंतर प्रयास करते रहना, अपने जीवन का लक्ष्य माना। उनका कहना था कि —

"मायूसी मुमकिन को भी ना–मुमकिन बना देती है।"

डॉ0 सीमा मिश्रा
उपप्रधानाचार्य

❋ वंदनीय लक्ष्मी बाई केलकर उपाख्य मौसी जी ❋

वंदनीय मौसी जी : नारि को नारायणी बना राष्ट्र सेवा हेतु समर्पित करने वाली मातृशक्ति।

भारतवर्ष की पुण्यभूमि पर अनेक वीरांगनाओं एवं प्रेरणास्त्रोत मातृशक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने मातृत्व के साथ–साथ समाज एवं राष्ट्र के लिए भी अपना जीवन अर्पित किया है, परंतु उनमें से भी कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी हैं जो न केवल एक व्यक्तित्व बल्कि पूर्णरूपेण विचारधारा बनकर सामने आते हैं। कुछ ऐसी ही प्रतिभा सम्पन्न रहीं राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना करने वाली आद्यसंचालिका वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर जी जिन्हें आज संपूर्ण राष्ट्र स्नेहपूर्वक मौसीजी कहकर पुकारता है।

वंदनीय मौसीजी का परिचय या व्यक्तित्व वर्णकुच शब्दों में समेटना यूँ तो असंभव सा ही है परंतु उनके जीवन से हम सभी को भी प्रेरणा मिले इसके लिए यह लेख मेरा एक छोटा सा प्रयास है।

मौसीजी का जन्म 6 जुलाई सन् 1905 एवं हिन्दी पंचांग अनुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष, दशमी, 1662 विक्रम संवत को महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ। अतः इस दिन प्रति वर्ष हम समिति की बहनें संकल्प दिवस के रूप में मनाते भी हैं। वे बचपन से ही तेजस्वी, जिज्ञासु एवं साहित्यप्रेमी थीं। उनका बचपन का नाम कमल था। वे एक राष्ट्रभक्त परिवार में जन्मी थी जहाँ की स्वयं उनकी माता उस समय बालगंगाधर तिलक द्वारा प्रेषित केसरी अखबार का पाठन करती थी। मौसीजी भी ध्यान लगाकर उन विचारों को सुनती थी जिससे बचपन में ही उनके अंदर राष्ट्रभक्ति, समर्पण, त्याग एवं बलिदान जैसे गुणों के बीज अंकुरित होने लगे थे।

समय बीता और 14 वर्ष की अल्पायु में ही मौसीजी का विवाह वर्धा के पुरुषोत्तम राव केलकर से करवा दिया गया एवं अब वे कमल से लक्ष्मी बाई केलकर हो गई। 27 वर्ष की अल्पायु में ही मौसीजी वैधव्य को प्राप्त हुई। इतनी कम उम्र इतना बड़ा परिवार और छोटे बच्चों की वजह से उनके ऊपर एक काफी बड़ा दायित्व था, लेकिन बचपन से ही मिली आध्यात्मिक शक्ति एवं आत्मविश्वास के बूते वे कभी विचलित नहीं हुई। उनकी बेटी पढ़ना चाहती थी परंतु उस वक्त कन्याओं की शिक्षा के लिए कोई विद्यालय नहीं था। अतः मौसीजी ने सोचा कि सिर्फ मेरी ही बेटी नहीं अपितु सभी बेटियों की शिक्षा के लिए पाठशाला होनी चाहिए और इस प्रकार उन्होंने उस समय वर्धा के एकमात्र कन्या विद्यालय की नींव रखी।

एक दिन की बात है मौसीजी के पुत्र मनोहर ने उन्हें कहा, "वाहिनी, मुझे कुछ पैसे दे दो मुझे दंड खरीदना है" मौसीजी ने पूछा, "तुम्हे दंड क्यों चाहिए, तुम्हे किस से लड़ना है?" तो उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे लड़ना नहीं है अपितु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में जाना है। वहाँ पर दंड के साथ मार्च और घिरने से बचने हेतु तरीके एवं दंड की सहायता से शारीरिक व्यायाम सिखाए जाते

हैं।" मौसीजी ने उनकी इच्छा पूरी कर दी। जल्द ही उन्होंने अपने पुत्रों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में एक अलग ही तरह का परिवर्तन महसूस किया। वे ज्यादा आज्ञाकारी, अनुशासित एवं राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत प्रोत हो गए। घर में राष्ट्रभक्ति के गीत गूंज उठे। यहाँ पर पुनः मौसीजी के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि की संघ की शाखा मात्र पुरुषों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए अपितु सभी महिलाओं के हृदय में भी राष्ट्रभक्ति के स्वर गूंजने चाहिए और इसी विचार से वह उस समय के RSS के सरसंघ चालक डॉ. के.बी. हेडगेवार जी से मिली ओर अपने विचार उनके समक्ष प्रस्तुत किए। डॉ. हेडगेवार जी ने भी उनके साथ सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि अगर आप इच्छुक हों तो आप स्वयं ही इसका नेतृत्व भी करें हम आपको यथोचित मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। इस तरह सन 1936, विजयादशमी के दिन मौसीजी के द्वारा राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की गई जो कि आज आज एक सबसे बड़ा विश्वव्यापी महिला संगठन है। यादव माधव काले ने इस कार्यक्रम की वर्धा में अध्यक्षता की थी। इस तरह समिति की पहली शाखा प्रारंभ हुई और मौसीजी ने अपने कार्यों का क्रियान्वयन करना प्रारंभ किया और संपर्क के माध्यम से समिति की शाखाएँ बढ़ती ही जा रही थी। संपर्क के लिए जगह जगह पैदल जाना मुश्किल होता था अतः उन्होंने अपने पुत्र द्वारा साइकिल चलाना सीखा और 35 वर्ष की आयु में मौसीजी ने अंग्रेजी भी सीखी। मौसी जी के अथक प्रयासों द्वारा समिति के कार्य बढ़ते गए, शाखाओं की संख्याएँ भी बढ़ती जा रही थी और समिति का विस्तार सिंध, गुजरात, मध्य प्रदेश एवं पंजाब तक होता गया। नागपुर और पुणे में भी मौसीजी ने शिक्षा वर्ग लगाए और सन 1934–35 में तो कराची मे भी शिक्षा शिक्षा वर्ग लगा। मौसीजी हमेशा कहती थी अपना कार्य स्वयं करो एवं दूसरों की सहायता करो। मातृत्व, कृतत्व एवं नेतृत्व की आधार शिला पर टिकी राष्ट्र सेविका समिति आज पूरे विश्व में "तेजस्वी हिन्दू राष्ट्र का पुनर्निर्माण", इस लक्ष्य के साथ अपने बहुआयामी सेवा, स्वावलंबन एवं आपदा प्रबंधन और अन्य कार्यों को कर रही हैं। शाखाओं के माध्यम से मातृ शक्तियों का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास करवाए जा रहा है। समिति के कार्यों का नियोजन कुछ ऐसा है कि पहले बहनें संपर्क कर अन्य बहनों को शाखा एवं मिलन में आने को प्रेरित करती हैं जहाँ शाखा की गतिविधियों द्वारा उनका शारीरिक, मानसिक, एवं बौद्धिक विकास होता है फिर उन महिलाओं को प्रेरित कर विभिन्न शिक्षा वर्गों द्वारा उनका बहुआयामी विकास कर कार्यकर्ता निर्माण कर समिति उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए अग्रसर करती है। हमारे लखीमपुर में भी विभिन्न स्थानों पर समिति की शाखाएँ चलाई जाती हैं जैसे काशीनगर दुर्गा मंदिर पर प्रत्येक गुरुवार सांय 5 से 6 एवं और भी शाखाएं हैं। आप भी चाहे तो इस विश्वव्यापी संगठन से जुड़कर मौसीजी के सपनों को पूरा करने एवं तेजस्वी राष्ट्र का निर्माण करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। भारत माता की जय। वंदे मातरम्।

समीक्षा त्रिपाठी
जिला तरुणी प्रमुख
(लखीमपुर)
राष्ट्र सेविाका समिति

श्रद्धांजलि

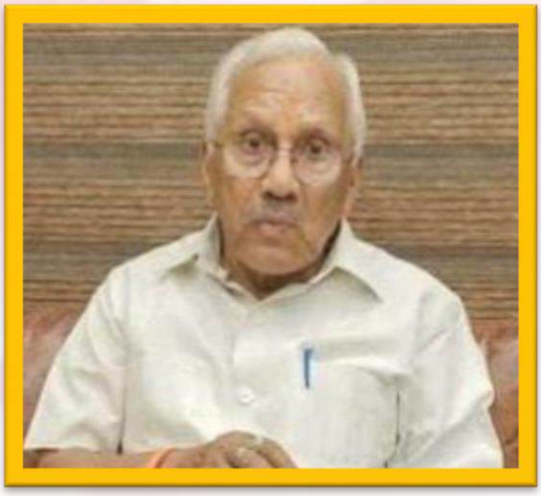

प्रो. विजय गुप्ता युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग के प्रवक्ता, रीडर एवं विभागाध्यक्ष रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला बौद्धिक प्रमुख फिर बाद में जिला कार्यवाह रहे। हिन्दू जागरण मंच के प्रांतीय अध्यक्ष एवं जीवन के अंतिम समय तक सरक्षक रहे। आप बाल्य काल से संघ के स्वयंसेवक एवं जीवन की अंतिम श्वास तक सक्रिय स्वयंसेवक रहे। संघ की विचारधारा ध्येय के प्रति आपका अटूट समर्पण एवं निष्ठा रही। केसरगंज जिला सीतापुर में जन्मे अठहत्तर वर्षीय विजय गुप्ता ने कभी अपने जीवन में विचारधारा स्तर से कभी कोई समझौता नहीं किया।

अत्यधिक शिष्ट सौम्य शालीन आकर्षक व्यक्तित्व, गरिमापूर्ण आत्मीयतायुक्त आचरण एवं व्यवहार समाज में आपकी पहचान रहा। आपको जिला प्रशासन की ओर से मुक्तिधाम में गार्ड ऑफ ऑनर मिला।

संघ के पंच परिवर्तन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण विषय कुटुंब प्रबोधन की दृष्टि से वे समाज में एक आदर्श थे। उन्होंने एक पिता की तरह अपने छोटे भाइयों को पाला उन्हें अच्छे संस्कार दिए। आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से उन्होंने अपने भाइयों को आर्थिक सहयोग तो अवश्य दिया मगर उन्हें अपने आश्रित नहीं होने दिया। पूरे परिवार को एकता संगठन के सूत्र में हमेशा बांधे रखा। उनमें कोई बुरी आदतें दुर्व्यसन नहीं पनपने दिया। सरस्वती शिशु मंदिर विद्या मंदिर में पढ़ने वाले उनके पांचों बेटे अपने जीवन में अच्छी अच्छी जगहों पर हैं और वे आज एक सफल एवं सार्थक जीवन जी रहे हैं। उनकी भतीजी इनाक्षी ने इस वर्ष अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा की मुख्य परीक्षा क्वालीफाई की। इनके पूरे परिवार ने अपनी सनातन संस्कृति संस्कारों का पोषण किया एवं अपने प्रखर राष्ट्रवाद से जुड़ा रहा। इसी तरह पूरे परिवार को एकता के सूत्र में बांधे रखना अब अगली पीढ़ी की जिम्मेदारी है। यही उनके प्रति सर्वोत्तम श्रद्धांजलि होगी कि हम उनके सपनो को कभी मरने न दें तथा उनकी आकांक्षाओं से जुड़े एवं उनके संकल्प को पूरा करें।

❋ श्रद्धांजलि ❋

❋ गुजरात में प्लेन क्रैश में असमय काल के गाल में समा जाने वाली दिवंगत आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि ❋

12 जून, 2025 की वह भयावह घटना जब अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही लंदन जा रहा विमान मेघाणीनगर इलाके में मेडिकल हॉस्टल परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में विमान में सवार 241 लोगों में से 240 लोगों की मौत हो गई, जबकि एक यात्री सौभाग्य से बच गया। इसके अलावा, दुर्घटनाग्रस्त विमान की चपेट में आकर 34 अन्य लोगों की भी जान चली गई।

इस भयावह दुर्घटना में अपनी जान गवाँने वाले सभी लोगों के प्रति विद्यालय परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने प्रियजनों को असमय खो देने वाले शोकाकुल परिवारों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह समस्त दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान कर समस्त शोक संतृप्त परिवारजनों को इस असहनीय दु:ख को सहने की सामर्थ्य और धैर्य प्रदान करे।

❋ श्रद्धांजलि ❋

विद्यालय की पूर्व छात्रा अंजली श्रीवास्तव के पिता श्री आशीष श्रीवास्तव (अधिवक्ता) एवं नाना श्री बी.एन. श्रीवास्तव (अधिवक्ता) निवासी लखीमपुर खीरी का बद्रीनाथ से वापसी करते वक्त पीलीभीत में माधव टांडा के पास कार दुर्घटना में दुर्भाग्यपूर्ण निधन हो गया। इस दुखद दुर्घटना के प्रति विद्यालय परिवार अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता है। परमेश्वर से प्रार्थना कि वह दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान तथा शोक संतृप्त परिवार को इस वेदना को सहने की सामर्थ्य धैर्य प्रदान करें!

बालिकाओं का कोना

❋ कविता—सावन आया ❋

सावन आया, सावन आया।
खुशियों का है मौसम छाया।।
चारों तरफ हरियाली आयी।
चारों तरफ हैं खुशियाँ छायी।।
नन्हें पौधों को जान मिली।
और बारिश को पहचान मिली।।
महादेव का पंसदीदा मास।
यह मास है सबसे खास।।
इसी मास में पड़ते झूले।
सुन्दर—सुन्दर फूल फूले।।

अविका वर्मा
कक्षा—8B

❋ कहानी — प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस ❋

चित्रांकन—प्रज्ञा वर्मा—12B

एक छोटे से शहर में प्लास्टिक बैग का बहुत अधिक उपयोग होता था। इससे शहर की सड़के और नदियाँ गंदी हो गई। पशु—पक्षी भी बीमार हो रहे थे। एक दिन शहर के लोगों ने प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस मनाने का फैसला किया। उन्होंने प्लास्टिक बैग की बजाय कपड़े के बैग और जूट के बैग का उपयोग करने का संकल्प किया। शहर के लोगों ने अपने घरों में प्लास्टिक बैग का उपयोग बंद कर दिया और कपड़े के बैंग का उपयोग शुरू कर दिया। दुकानदारों ने भी कपड़े के बैग में ही सामान देना शुरू कर दिया। धीर—धीरे, शहर की सड़कें और नदियाँ स्वच्छ हो गईं। पशु—पक्षी भी स्वस्थ हो गए। शहर के लोगों ने महसूस किया कि प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस मनाने से उनका शहर और पर्यावरण दोनों ही सुरक्षित हो गए।

नैतिकता— इस शीर्षक से हमें यह सीख मिलती है कि अगर हम सब मिलकर प्लास्टिक के उपयोग को कम करें और पर्यावरण की रक्षा करें तो हम एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज बना सकते हैं।

प्रज्ञा वर्मा
कक्षा—12B

⁕ अन्तर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस ⁕

आओ पर्यावरण बचाएँ।
प्लास्टिक को हम दूर भगाएँ।।
कभी भी ये नष्ट नहीं होती।
जिससे दूषित होती मिट्टी।।
इस पर प्रतिबंध लगाना है।
प्लास्टिक को दूर भगाना है।।
आओ यह संदेश फैलाएं।
धरती को प्लास्टिक मुक्त बनाएँ।।

आरोही शर्मा
कक्षा–8A

⁕ राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस ⁕

(डॉक्टरों के प्रति सम्मान और आभार का दिन)

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस हर साल 1 जुलाई को मनाया जाता है, जो डॉक्टरों के प्रति सम्मान और आभार का दिन है। यह दिन डॉ0 बिधान चंद्र रॉय की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है जो एक महान चिकित्सक और पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री थे। डॉक्टर हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हमारे स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं, हमें बीमारियों से बचाते हैं और हमारे जीवन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस को व्यक्तिगत जीवन और समुदायों में चिकित्सकों के योगदान को सराहने हेतु मनाया जाता है।

"अच्छा चिकित्सक रोग का इलाज करता है, लेकिन महान चिकित्सक उस रोगी का इलाज करता है जो रोगग्रस्त है।"

अवंतिका वर्मा
कक्षा–8A

❋ कविता – गुरु पूर्णिमा ❋

हमें पढ़ना–लिखना सिखाते हैं गुरु।
हर मुश्किल पार करना सिखाते हैं गुरु।।
शुरू से आखिर तक पढ़ाते हैं गुरु।
मंजिल तक पहुँचाते हैं गुरु।।
लक्ष्य हमें दिखलाते हैं गुरु।
उस लक्ष्य में सफल होने की प्रेरणा देते हैं गुरु।।
अक्षर से अक्षर पढ़ाते हैं गुरु।
अक्षरों को मिलाकर पढ़ना सिखाते हैं गुरु।।
हर एक गुण हमें सिखाते हैं गुरु।
हर विषय में ज्ञान प्राप्त कराते हैं गुरु।।
मुसीबत में साथ खड़े होते हैं गुरु।
हर मुसीबत को पार कराते हैं गुरु।।

आयुषी वर्म्र
कक्षा–10C

❋ National Doctor's Day ❋

National Doctor's Day is an annual observance of 1st of July. It is celebrated for saluting the life saving efforts of doctors, annually we celebrate this day as National Doctor's Day. In Indian society doctors are said to be next to God. Doctors are highly respected in the world while they are worshipped in India.

Doctors are also an integral part of life, starting from the birth. Doctors play significant role in overall wellness. The never stopping efforts, hard work, loyality, truthfulness and unwavering dedication of medical professionals who work relentlessly to save lives and improve healthcare outcomes. This special day is a tribute to the selfless service of doctors, who embody the spirit of compassion, care and commitment.

The date July 1st marks the anniversary of the first successful kidney transplant performed by Dr. Joseph Murray and Dr. David Hume in 1959.

On this day, we take a moment to express our deepest gratitude to these unsung heroes of Health care.

Mannat Deep Gupta
Class-8A

चित्रांकन–आयुषी पटेल–9A

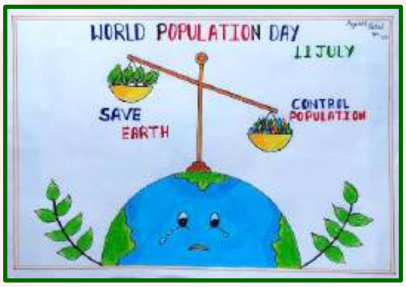

चित्रांकन–आयुषी पटेल–9A

चित्रांकन–प्रियंका गुप्ता–12D

चित्रांकन–सौम्या राठौर–6C

चित्रांकन–संस्कृति श्रीवास्तव–7A

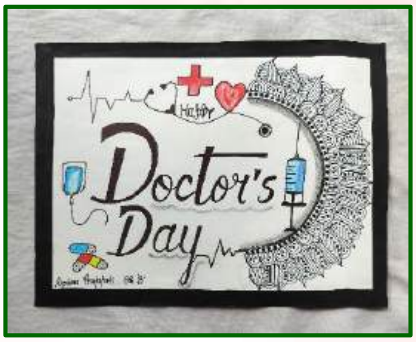

चित्रांकन–अग्रिमा प्रजापति–8B

चित्रांकन–अक्षिता सोनी–8A

चित्रांकन–पंखुड़ी मिश्रा–8A

चित्रांकन–आर्ना शुक्ला–8A

चित्रांकन–निधि–7B

चित्रांकन–माही गुप्ता–8A

चित्रांकन–माही गुप्ता–8A

Current Affairs

जून 2025 : राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पटल पर घटित महत्वपूर्ण घटनाएँ

जून 2025 विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक घटनाक्रमों से भरा रहा। यहाँ भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुईं 10–10 सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ प्रस्तुत हैं :

भारतवर्ष में घटित 10 सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ:

1. **5 जून 2025– भारत ने चंद्रयान-4 मिशन लॉन्च किया :** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से अपने महत्वाकांक्षी चंद्रयान-4 मिशन का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर जल-बर्फ की उपस्थिति की विस्तृत खोज करना और भविष्य के मानव मिशनों के लिए संभावित लैंडिंग साइट्स की पहचान करना था। इसमें एक ऑर्बिटर और एक उन्नत रोवर शामिल था।

   इनसाइट्स: यह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक और मील का पत्थर साबित हुआ, जो वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में उसकी बढ़ती क्षमताओं को प्रदर्शित करता है। यह चंद्रमा के संसाधनों और उसके मानवीय अन्वेषण के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करने की उम्मीद है।

2. **10 जून 2025– लोकसभा में आर्थिक सुधारों पर महत्वपूर्ण विधेयक पारित :** संसद के मानसून सत्र में, सरकार ने कई महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार विधेयकों को लोकसभा से पारित कराया। इनमें कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने, श्रम कानूनों को सरल बनाने और छोटे व मध्यम उद्योगों (MSMEs) को बढ़ावा देने से संबंधित प्रावधान शामिल थे। विपक्ष के विरोध के बावजूद, सरकार ने बहुमत के दम पर इन विधेयकों को पारित कराया।

   इनसाइट्स: इन सुधारों का उद्देश्य भारत की अर्थव्यवस्था को गति देना, विदेशी निवेश आकर्षित करना और रोजगार सृजन को बढ़ावा देना था। हालांकि, इनके कार्यान्वयन और दीर्घकालिक प्रभावों पर राजनीतिक और आर्थिक विश्लेषकों के बीच बहस जारी है।

3. **15 जून 2025– दक्षिण भारत में भीषण बाढ़ और भूस्खलन :** जून के मध्य में, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु सहित दक्षिण भारत के कई राज्यों में अत्यधिक मानसूनी बारिश के कारण भीषण बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएँ हुईं। इससे जान-माल का भारी नुकसान हुआ, हजारों लोग विस्थापित हुए और कृषि भूमि जलमग्न हो गई। सेना और आपदा राहत टीमों ने बड़े पैमाने पर बचाव अभियान चलाए।

   इनसाइट्स : यह घटना जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों और भारत में बेहतर आपदा प्रबंधन और शहरी नियोजन की आवश्यकता को रेखांकित करती है, विशेषकर संवेदनशील तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में।

4. **18 जून 2025– भारत-जापान रणनीतिक वार्ता का उच्च-स्तरीय दौर :** नई दिल्ली में भारत और जापान के बीच रणनीतिक वार्ता का एक उच्च-स्तरीय दौर आयोजित किया गया। इसमें रक्षा सहयोग, आर्थिक साझेदारी, स्वच्छ ऊर्जा और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियों पर चर्चा हुई। दोनों देशों ने कई

समझौता ज्ञापनों)MoUs) पर हस्ताक्षर किए, जिसमें संयुक्त नौसैनिक अभ्यास और तकनीकी आदान-प्रदान शामिल थे।

इनसाइट्स : यह वार्ता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देशों की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

5. **22 जून 2025– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का चरण-II लागू :** केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के चरण-II के तहत कई महत्वपूर्ण सुधारों को पूरे देश में लागू करना शुरू किया। इसमें व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार, डिजिटल शिक्षा प्लेटफार्मों का एकीकरण और शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बड़े बदलाव शामिल थे।

इनसाइट्स : यह कदम भारत की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने और युवाओं को रोजगार योग्य कौशल प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

6. **24 जून 2025– भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम में रिकॉर्ड निवेश :** जून के अंतिम सप्ताह में जारी आंकड़ों के अनुसार, भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम में वर्ष की दूसरी तिमाही में रिकॉर्ड विदेशी और घरेलू निवेश देखा गया। फिनटेक, एडटेक और डीपटेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। कई भारतीय स्टार्टअप्स ने यूनिकॉर्न का दर्जा प्राप्त किया।

इनसाइट्स : यह भारत की बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था और युवा उद्यमियों की नवाचार क्षमता को दर्शाता है, जो देश को वैश्विक स्टार्टअप हब के रूप में स्थापित कर रहा है।

7. **26 जून 2025– दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का अंतिम चरण का उद्घाटन :** देश के सबसे बड़े एक्सप्रेसवे परियोजनाओं में से एक, दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के अंतिम चरण का उद्घाटन किया गया। यह पूरी तरह से चालू हो गया, जिससे दोनों महानगरों के बीच यात्रा का समय काफी कम हो गया और व्यापार व वाणिज्य को बढ़ावा मिला।

इनसाइट्स : यह भारत में बुनियादी ढांचे के विकास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो लॉजिस्टिक्स की लागत को कम करने और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में सहायक होगा।

8. **27 जून 2025– भारत ने जी20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक की मेजबानी की :** भारत ने जी20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक की मेजबानी की, जिसमें वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सहयोग पर चर्चा हुई। भारत ने हरित हाइड्रोजन और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने पर जोर दिया।

इनसाइट्स : यह बैठक वैश्विक ऊर्जा एजेंडे में भारत की बढ़ती भूमिका और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए उसकी प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

9. **28 जून 2025– भारतीय सेना का "ऑपरेशन शक्ति" पूरा हुआ :** भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा (LOC) के पास आतंकवादियों के खिलाफ चलाए जा रहे अपने बड़े "ऑपरेशन शक्ति" को सफलतापूर्वक पूरा करने की घोषणा की। इस ऑपरेशन में कई घुसपैठ के प्रयासों को विफल किया गया और आतंकवादियों को मार गिराया गया।

इनसाइट्स : यह पाकिस्तान सीमा पार से होने वाली घुसपैठ को रोकने और क्षेत्र में शांति व सुरक्षा बनाए रखने के लिए भारतीय सुरक्षा बलों की निरंतर सतर्कता और क्षमता को दर्शाता है।

10. 30 **जून** 2025– **मानसून की प्रगति और कृषि पर प्रभाव की रिपोर्ट :** भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने जून के अंत तक पूरे देश में मानसून की प्रगति पर एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट में कुछ क्षेत्रों में अच्छी वर्षा और अन्य में कमी का उल्लेख किया गया, जिसका खरीफ फसलों की बुवाई पर सीधा असर पड़ा।

इनसाइट्स : मानसून भारत की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से कृषि क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है। इसकी प्रगति खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आय पर सीधा प्रभाव डालती है।

अंतरराष्ट्रीय पटल पर घटित 10 सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ :

1. 3 **जून** 2025– **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन पर आपातकालीन शिखर सम्मेलन :** संयुक्त राष्ट्र ने न्यूयॉर्क में जलवायु परिवर्तन पर एक आपातकालीन शिखर सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों और पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग लिया। बढ़ते वैश्विक तापमान और चरम मौसमी घटनाओं पर चिंता व्यक्त की गई और 2030 तक उत्सर्जन में कटौती के नए लक्ष्य निर्धारित करने पर सहमति बनी।

   इनसाइट्स: यह शिखर सम्मेलन जलवायु संकट की तात्कालिकता को दर्शाता है और वैश्विक समुदाय पर अधिक महत्वाकांक्षी जलवायु कार्रवाई के लिए दबाव बढ़ाता है।

2. 7 **जून** 2025– **यूरोपीय संघ ने नए डिजिटल सेवा अधिनियमों को लागू किया :** यूरोपीय संघ (EU) ने अपने नए डिजिटल सेवा अधिनियमों (DSAs) को पूरी तरह से लागू किया, जिसका उद्देश्य ऑनलाइन प्लेटफार्मों की जवाबदेही बढ़ाना, गलत सूचना और अवैध सामग्री को नियंत्रित करना है। गूगल, फेसबुक और एक्स जैसे बड़े तकनीकी दिग्गजों को इन नियमों का पालन करना अनिवार्य हो गया।

   इनसाइट्स: यह कदम वैश्विक स्तर पर डिजिटल क्षेत्र के विनियमन के लिए एक मिसाल कायम करता है और बड़ी तकनीकी कंपनियों की शक्ति पर अंकुश लगाने का प्रयास है।

3. 12 **जून** 2025– **मध्य पूर्व में शांति वार्ता में महत्वपूर्ण प्रगति :** संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता से, इजरायल और कुछ अरब देशों के बीच एक महत्वपूर्ण शांति वार्ता जेनेवा में संपन्न हुई। वार्ता में गाजा पट्टी में मानवीय सहायता पहुंच, क्षेत्रीय सुरक्षा और भविष्य के संबंधों पर कुछ सहमति बनी।
   इनसाइट्स : यह मध्य पूर्व में तनाव कम करने और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक नाजुक लेकिन महत्वपूर्ण कदम था।

4. 16 **जून** 2025– **वैश्विक साइबर सुरक्षा पर बड़े हमले :** दुनिया भर की कई सरकारों और बड़ी कंपनियों को लक्षित करते हुए एक समन्वित और बड़े पैमाने पर साइबर हमला हुआ। इससे महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे और वित्तीय प्रणालियाँ प्रभावित हुईं। कई देशों ने तत्काल जांच शुरू की और साइबर सुरक्षा उपायों को मजबूत करने का आह्वान किया।

   इनसाइट्स: यह घटना साइबर हमलों के बढ़ते खतरे और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत साइबर सुरक्षा रणनीतियों की आवश्यकता को उजागर करती है।

5. 19 **जून** 2025– **अफ्रीका में नए व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर :** अफ्रीकी महाद्वीप के 20 से अधिक देशों ने एक नए अंतर-अफ्रीकी व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य महाद्वीप के भीतर व्यापार बाधाओं को कम करना और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना है।

इनसाइट्स : यह समझौता अफ्रीकी देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने, क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और महाद्वीप के आर्थिक विकास को गति देने की क्षमता रखता है।

6. **21 जून 2025– मंगल ग्रह पर नए रोवर की सफल लैंडिंग :** यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) द्वारा भेजा गया एक नया उन्नत रोवर मंगल ग्रह की सतह पर सफलतापूर्वक उतरा। यह रोवर मंगल पर जीवन के संकेतों की खोज करने और भविष्य के मानव मिशनों के लिए नमूने एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

   इनसाइट्स : यह अंतरिक्ष अन्वेषण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, जो मानव जाति की ब्रह्मांड को समझने और अन्य ग्रहों पर जीवन की संभावना तलाशने की निरंतर इच्छा को दर्शाती है।

7. **25 जून 2025– लैटिन अमेरिका में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी :** लैटिन अमेरिका के कई देशों में राजनीतिक विरोध प्रदर्शन और नागरिकये अशांति बढ़ गई, विशेष रूप से आर्थिक संकट और सामाजिक असमानता के मुद्दों को लेकर। कुछ देशों में सरकारों को बड़े चुनौतियों का सामना करना पड़ा। **इनसाइट्स:** यह क्षेत्र में लंबे समय से चली आ रही सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और राजनीतिक ध्रुवीकरण को दर्शाता है, जिसके लिए स्थायी समाधानों की आवश्यकता है।

8. **26 जून 2025– वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट :** संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी की, जिसमें बताया गया कि जलवायु परिवर्तन, संघर्षों और आर्थिक झटकों के कारण दुनिया भर में खाद्य असुरक्षा और कुपोषण में वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में तत्काल कार्रवाई की का आह्वान किया गया।

   इनसाइट्स : यह रिपोर्ट वैश्विक खाद्य प्रणालियों की भेद्यता और सतत कृषि, जलवायु लचीलापन और संघर्षों के समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।

9. **28 जून 2025– प्रशांत क्षेत्र में समुद्री प्रदूषण पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन :** प्रशांत महासागर के द्वीपीय देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने समुद्री प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक उच्च-स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया। इसमें प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के लिए नई रणनीतियाँ और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तंत्र विकसित करने पर सहमति बनी।

   इनसाइट्स : यह सम्मेलन महासागरों के स्वास्थ्य के लिए बढ़ते खतरे और इस गंभीर पर्यावरणीय समस्या से निपटने के लिए वैश्विक प्रयासों की आवश्यकता को दर्शाता है।

10. **30 जून 2025– प्रमुख तेल उत्पादक देशों की बैठक और उत्पादन कटौती :** प्रमुख तेल उत्पादक देशों (OPEC समूह) ने जून के अंत में एक महत्वपूर्ण बैठक की, जिसमें वैश्विक मांग में कमी और आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण तेल उत्पादन में और कटौती करने का निर्णय लिया गया। इससे अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों पर असर पड़ा।

    इनसाइट्स : यह निर्णय वैश्विक अर्थव्यवस्था की नाजुक स्थिति और ऊर्जा बाजारों की अस्थिरता को दर्शाता हैए जिसका दुनिया भर के उपभोक्ताओं और व्यवसायों पर प्रभाव पड़ता है।

आगामी योजनाएँ

- 19 जुलाई – संकुल स्तरीय एक दिवसीय ''किशोरी विकास वर्ग'', ''वन्दना प्रमुखों का प्रशिक्षण वर्ग'' एवं ''प्रधानाचार्य समीक्षा बैठक''।
- 26 जुलाई – कारगिल विजय दिवस।
- 4 अगस्त – द्वितीय मासिक परिक्षाएँ प्रारम्भ।

मीडिया की नजर में